RASSA International Conference on 'Sustainable Agricultural Development in Changing Global Scenario' at IESD, BHU, Varanasi w.e.f. 11-13 October 2019

पराजित किया।

अन्डर 19 बालक वर्ग में आर्मी पब्लिक स्कूल न्यू कैण्ट इलाहाबाद ने

के बाद रविवार को सभी ग्रुप का सेमी फाइनल एवं फाइनल मैच खेला जाएगा साथ ही पुरस्कार वितरण समारोह होगा।

दिलाई।

प्रथम हाफ में यही स्कोर रहा। खेल के 61वें मिनट में अयोध्या मंडल की

फाइव ट्रिलियन डॉलर इकोनॉमी में कृषि क्षेत्र की भूमिका अहम

अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में बोले ख्यात कृषि वैज्ञानिक प्रो. पंजाब सिंह

जासं, वाराणसी : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के फाइव ट्रिलियन डॉलर इकोनॉमी के लक्ष्य को हासिल करने में कृषि क्षेत्र की भूमिका महत्वपूर्ण है। लक्ष्य हासिल करने के लिए संसाधनों का कुशल और प्रभावी प्रयोग जरूरी है, जिसके लिए आवश्यक सुविधाओं और तकनीकों को उपलब्धता समय की मांग है। यह बातें बीएचयू के पूर्व कुलपति व राष्ट्रीय कृषि विज्ञान अकादमी (नास) के अध्यक्ष प्रो. पंजाब सिंह ने कही। वह बीएचयू स्थित विज्ञान संस्थान के संगोष्ठी संकुल में शुक्रवार को तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन 'बदलते वैश्विक परिदृश्य में सतत कृषि विकास' के उद्घाटन सत्र को संबोधित कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि 1.3 अरब लोगों की खाद्य आवश्यकताओं की पूर्ति अपने आप में बहुत बड़ी चुनौती है। इसके लिए सुविधाओं संग नवीन तकनीक का कुशलता से प्रयोग करना होगा। युवा वैज्ञानिक कृषि क्षेत्र की समस्याओं के समाधान खोजने की दिशा में काम करें, ताकि वांछित लक्ष्य हासिल किया जा सके। उन्होंने बताया कि वर्तमान में

बीएचयू

- कहा, लक्ष्य प्राप्ति के लिए संसाधनों का हो कुशल व प्रभावी उपयोग
- 'बदलते वैश्विक परिदृश्य में सतत कृषि विकास' को किया संबोधित

बीएचयू स्थित विज्ञान संकुल में विचार व्यक्त करते प्रो. पंजाब सिंह ● जागरण

उद्देश्य उत्पादन बढ़ाने के साथ-साथ प्राकृतिक संसाधनों को भी बढ़ाना होना चाहिए। नंद शैक्षिक ग्रामीण विकास संस्था-लखनऊ के अध्यक्ष डा. आर के सिंह ने कहा कि किसानों के सामने सीमित संसाधन में अधिक उत्पादन की चुनौती है। बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिकी विवि के कुलपति डा. यूएस गौतम ने कहा कि कृषि क्षेत्र में आ रहे सकारात्मक

पर भी प्रभाव पड़ना चाहिए, ताकि कृषि क्षेत्र को वास्तव में भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ कहा जा सके। वहीं अध्यक्षता करते हुए आरएएसएस (रॉयल एसोसिएशन फार साइंस-लेड सोशियो-कल्चरल एडवांसमेंट) के अध्यक्ष इंजीनियर एके सिंह ने किसानों और कृषि क्षेत्र के हितों को ध्यान में रखते हुए शोध कार्य पर बल दिया। उन्होंने कहा कि गांव व शहर दोनों जगह समिति बनाई जाएं। किसानों के उत्पाद समितियों के माध्यम से सीधे शहर में पहुंचे और शहर की समितियां शिक्षा और तकनीक गांव-गांव में पहुंचाए। इससे किसानों को बिचौलियों से छुटकारा मिलेगा और उनका जीवन समृद्ध होगा। इस दौरान युवा कृषि वैज्ञानिकों का सम्मान गया। साथ ही डा. रजनीश सिंह व डा. बृजेंद्र सिंह द्वारा लिखित दो पुस्तकों का विमोचन भी किया गया।

सम्मेलन के पहले दिन तकनीकी सत्रों में वैज्ञानिकों व शोधार्थियों ने विभिन्न विषयों पर शोध पत्र प्रस्तुत किए। स्वागत पर्यावरण एवं धारणीय विकास संस्थान के संकाय प्रमुख प्रो. जीएस सिंह व धन्यवाद ज्ञापन आयोजन

बीएचयू के विज्ञान संस्थान में दो पुस्तकों का विमोचन करते पूर्व वीसी प्रो. पंजाब सिंह व अन्य विशिष्टजन। • हिन्दुस्तान

बढ़ती आबादी का पेट भरना व रोजगार भविष्य की चुनौती

वाराणसी | कार्यालय संवाददाता

रानी लक्ष्मीबाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के पूर्व कुलाधिपति प्रो. पंजाब सिंह ने कहा कि देश की बढ़ती आबादी का पेट भरना और उन्हें रोजगार मुहैया करना भविष्य की सबसे बड़ी चुनौती है। इस लक्ष्य को हासिल करने में कृषि का क्षेत्र महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। वह शुक्रवार को बीएचयू के विज्ञान संस्थान के संगोष्ठी संकुल में बदलते वैश्विक परिदृश्य में सतत कृषि विकास विषय पर आयोजित तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के उद्घाटन अवसर पर बोल रहे थे।

प्रो. सिंह ने कहा कि भारत को पांच ट्रिलियन डालर की अर्थव्यवस्था बनाने के प्रधानमंत्री के लक्ष्य को हासिल करने में कृषि क्षेत्र महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है। लखनऊ के डॉ. आरके सिंह ने कहा कि भारत में कृषि उत्पादकता में न सिर्फ बेहतर तकनीकों का अभाव है बल्कि उत्पादन का अधिकांश भाग उपभोग भी कर लिया जाता है। बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. यूएस गौतम ने कहा कि कृषि क्षेत्र के सकारात्मक परिवर्तनों का सामाजिक-आर्थिक विकास पर भी प्रभाव पड़ना चाहिए।

सतत विकास

- पांच ट्रिलियन अर्थव्यवस्था में कृषि क्षेत्र दे सकता है योगदान
- कृषि में सकारात्मक परिवर्तन का दूसरे क्षेत्रों पर भी असर दिखे

इस अवसर पर डॉ. रजनीश सिंह व डॉ. बृजेन्द्र सिंह द्वारा लिखित दो पुस्तकों का विमोचन हुआ। तकनीकी सत्रों में कृषि वैज्ञानिकों व शोध छात्रों ने कृषि विकास के मॉडल तथा बदलते कृषि पर शोध पत्र पढ़ा। वनस्पति विज्ञान विभाग की प्रो. मधुलिका अग्रवाल ने बढ़ते वायु प्रदूषण से कृषि उत्पादकता पर पड़ रहे प्रतिकूल प्रभाव की चर्चा की। सम्मेलन में फिलीपिंस, नेपाल, श्रीलंका, बांग्लादेश, अमेरिका, आस्ट्रेलिया मैक्सिको के करीब 90 वैज्ञानिकों ने भाग लिया। स्वागत प्रो. जीएस सिंह तथा धन्यवाद डॉ. राजीव प्रताप सिंह ने दिया।

प्रो. गुडइनफ को नोबेल पर खुशी

वाराणसी। लिथियम ऑयन बैटरी विकास के लिए अमेरिकी रसा वैज्ञानिक प्रोफेसर जॉन गुडइनफ 2019 का नोबेल पुरस्कार दिए ज की घोषणा पर आईआईटी बीएचयू खुशी का माहौल है। इस संस्थान प्राध्यापक प्रो. गुडइनफ के मार्गदर्शन शोध कर चुके हैं।

आईआईटी में सिरामि इंजीनियरिंग विभाग में असिस्टें प्रोफेसर और जॉन गुडइनफ के शोध छात्र डॉ. प्रीतम सिंह ने बताया लिथियम ऑयन बैटरी वैश्विक स पर पोर्टेबल इलेक्ट्रानिक्स, लंबी दूरी इलेक्ट्रिक कारों एवं ऊर्जा के नव स्रोतों के भंडारण को बल प्रदान क है। डॉ. प्रीतम ने कहा कि लिथि ऑयन बैटरियां अगली पीढ़ी इलेक्ट्रिक वाहनों के निर्माण महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगी। रसा विभाग की असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. आ गुप्ता और उनके मार्गदर्शन में कार्य रहे शोधार्थी ने बताया कि 98 व प्रोफेसर गुडइनफ नोबेल पुरस्कार प्रा करने वाले सबसे अधिक आयु व्यक्ति हैं। द्वितीय विश्व युद्ध में उन सैनिक के रूप में भी सेवाएं दीं।

कमजोर छात्रों को 'रिमेडियल' कक्षाएं

वाराणसी | वरिष्ठ संवाददाता

सभी राजकीय विद्यालयों में कक्षा-9 के गणित, विज्ञान और हिन्दी विषयों में

सुधार की चिंता

- कक्षा 9 में गणित, विज्ञान और हिन्दी की चलेगी विशेष कक्षाएं

टेस्ट से चुने जाएंगे छा

कक्षा 9 में सभी छात्रों का एक टेस्ट होगा। इसमें गणित, विज्ञान और हि

बीएचयू के विज्ञान संस्थान में दो पुस्तकों का विमोचन करते पूर्व वीसी प्रो. पंजाब सिंह व अन्य विशिष्टजन। • हिन्दुस्तान

बढ़ती आबादी का पेट भरना व रोजगार भविष्य की चुनौती

प्रो. गुडइनफ को नोबेल पर खुशी

कमजोर छात्रों को 'रिमेडियल' कक्षाएं

दास, राम तपस्या दास, ईश्वर दास, सर्वेश्वर शरण, सतुआ बाबा, बालक बाबा, बृजकिशोर दास, रामदरस अधिकारी, अनंत दास आदि मौजूद रहे।

5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने में कृषि क्षेत्र महत्वपूर्ण

बीएचयू विज्ञान संकुल सभागार में सतत कृषि विकास पर आयोजित अंतरराष्ट्रीय सेमिनार में पुस्तक का विमोचन करते प्रो पंजाब सिंह व अन्य।

अमर उजाला ब्यूरो

वाराणसी। भारत को पांच ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने के लक्ष्य में कृषि क्षेत्र महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है। युवा वैज्ञानिक कृषि क्षेत्र की समस्याओं के समाधान खोजने पर काम करें। उक्त विचार रानी लक्ष्मीबाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय झांसी के कुलाधिपति प्रो. पंजाब सिंह ने व्यक्त किए। वह शुक्रवार को बदलते वैश्विक परिदृश्य में सतत कृषि विकास पर बीएचयू के विज्ञान संस्थान में आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे। सम्मेलन के पहले दिन प्रथम सत्र में शोधार्थियों ने शोध पत्र प्रस्तुत किए। इस अवसर पर युवा और प्रख्यात वैज्ञानिकों को सम्मानित किया गया। इसके अलावा डॉ. रजनीश सिंह, डॉ. बृजेंद्र सिंह की पुस्तकों का भी विमोचन किया गया।

बीएचयू के विज्ञान संस्थान में अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन

युवा और प्रख्यात वैज्ञानिकों को किया सम्मानित

इस दौरान डॉ. आरके सिंह ने कहा कि किसानों के सामने कम संसाधनों में अधिक उत्पादन की चुनौती है। बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. यूएस गौतम ने कहा कि कृषि क्षेत्र में आ रहे सकारात्मक परिवर्तनों का सामाजिक-आर्थिक विकास पर भी सीधा-सीधा प्रभाव पड़ेगा। इस अवसर पर एके सिंह, प्रो. जीएस सिंह, डॉ. राजीव प्रताप सिंह ने विचार व्यक्त किए।

4G 4G 07:52 Vo)) 1 LTE2 4G 90%

उन्हें बेटे पर पूरा भरोसा था। तैयारी के कारण वह बहुत कम घर आता था। अब बेटे की सफलता ने सिर ऊंचा कर दिया है। मां कौशल्या देवी भी खुश हैं। दूसरा बेटा श्रीकृष्ण भी स्नातक कर रहा है। बेटी अग्रसेन कन्या पीजी कॉलेज से बायो से स्नातक कर रही है।

राव आईएएस के कई छ

वाराणसी। राज्य सिविल सेवा परीक्षा (पीसीएस) में राव आईएएस के कई छात्र-छात्राएं सफल रहे। संस्थान के निदेशक अजीत श्रीवास्तव ने बताया कि शिखा शंखवार चयनित हुईं।

मोहित दुबे डीपीआरओ, अभि

बीएचयू में आज जुटेंगे कृषि वैज्ञानिक

वाराणसी। कृषि क्षेत्र में भविष्य की चुनौतियों पर चर्चा के लिए शुक्रवार को बीएचयू विज्ञान संस्थान के शताब्दी भवन सभागार में अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में कृषि वैज्ञानिकों का जुटान होगा।

बीएचयू के पूर्व कुलपति प्रो. पंजाब सिंह ने बताया कि आने वाले समय की सबसे बड़ी चुनौती वर्तमान की आवश्यकताओं को पूरा करते हुए भावी पीढ़ी को आजीविका प्रदान करना है। सम्मलेन में 90 से ज्यादा वैज्ञानिक और 300 से ज्यादा छात्र शिरकत करेंगे। अध्यक्षता सामाजिक-सांस्कृतिक प्रगति रॉवल एसोसिएशन के अध्यक्ष इंजिनियर एके सिंह तथा उद्घाटन प्रो. पंजाब सिंह करेंगे। विशिष्ट अतिथि बांदा कृषि एवं प्रोद्योगिक

विद्याप प्रवेश प

वाराणसी | वरिष्ठ

महात्मा गांधी काशी (एलएलबी) की पु एक केंद्र बदला गय पहली बार जून में केंद्र जगतपुर पीजी कॉलेज था। यह प्रवे दी गई थी। 13 अव पुन:प्रवेश परीक्षा बनाए गए हैं।

इस बार जगतपु परीक्षा केंद्र नहीं कॉलेज को परीक्षा

बीएचयू के विज्ञान संस्थान में दो पुस्तकों का विमोचन करते पूर्व वीसी प्रो. पंजाब सिंह व अन्य विशिष्टजन। • हिन्दुस्तान

बढ़ती आबादी का पेट भरना व रोजगार भविष्य की चुनौती

वाराणसी | कार्यालय संवाददाता

रानी लक्ष्मीबाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के पूर्व कुलाधिपति प्रो. पंजाब सिंह ने कहा कि देश की बढ़ती आबादी का पेट भरना और उन्हें रोजगार मुहैया कराना भविष्य की सबसे बड़ी चुनौती है। इस लक्ष्य को हासिल करने में कृषि का क्षेत्र महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। यह शुक्रवार को बीएचयू के विज्ञान संस्थान के संगोष्ठी संकुल में बदलते वैश्विक परिदृश्य में सतत कृषि विकास विषय पर आयोजित तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के उद्घाटन अवसर पर बोल रहे थे।

प्रो. सिंह ने कहा कि भारत को पांच ट्रिलियन डालर की अर्थव्यवस्था बनाने के प्रधानमंत्री के लक्ष्य को हासिल करने में कृषि क्षेत्र महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है। लखनऊ के डॉ. आरके सिंह ने कहा कि भारत में कृषि उत्पादकता में न सिर्फ बेहतर तकनीकों का अभाव है बल्कि उत्पादन का अधिकांश भाग उपभोग भी कर लिया जाता है। बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. यूएस गौतम ने कहा कि कृषि क्षेत्र के सकारात्मक परिवर्तनों का सामाजिक-आर्थिक विकास पर भी प्रभाव पड़ना चाहिए।

सतत विकास

- पांच ट्रिलियन अर्थव्यवस्था में कृषि क्षेत्र दे सकता है योगदान
- कृषि में सकारात्मक परिवर्तन का दूसरे क्षेत्रों पर भी असर दिखे

इस अवसर पर डॉ. रजनीश सिंह व डॉ. बृजेन्द्र सिंह द्वारा लिखित दो पुस्तकों का विमोचन हुआ। तकनीकी सत्रों में कृषि वैज्ञानिकों व शोध छात्रों ने कृषि विकास के मॉडल तथा बदलते कृषि पर शोध पत्र पढ़ा। वनस्पति विज्ञान विभाग की प्रो. मधुलिका अग्रवाल ने बढ़ते वायु प्रदूषण से कृषि उत्पादकता पर पड़ रहे प्रतिकूल प्रभाव की चर्चा की। सम्मेलन में फिलीपिंस, नेपाल, श्रीलंका, बांग्ला देश, अमेरिका, आस्ट्रेलिया मैक्सिको के करीब 90 वैज्ञानिकों ने भाग लिया। स्वागत प्रो. जीएस सिंह तथा धन्यवाद डॉ. राजीव प्रताप सिंह ने दिया।

प्रो. गुडइनफ को नोबेल पर खुशी

वाराणसी। लिथियम आयन बैटरी के विकास के लिए अमेरिकी रसायन वैज्ञानिक प्रोफेसर जॉन गुडइनफ को 2019 का नोबेल पुरस्कार दिए जाने की घोषणा पर आईआईटी बीएचयू में खुशी का माहौल है। इस संस्थान के प्राध्यापक प्रो. गुडइनफ के मार्गदर्शन में शोध कर चुके हैं।

आईआईटी में सिरामिक इंजीनियरिंग विभाग में असिस्टेंट प्रोफेसर और जॉन गुडइनफ के पूर्व शोध छात्र डॉ. प्रीतम सिंह ने बताया कि लिथियम आयन बैटरी वैश्विक स्तर पर पोर्टेबल इलेक्ट्रानिक्स, लंबी दूरी की इलेक्ट्रिक कारों एवं ऊर्जा के नवीन स्रोतों के भंडारण को बल प्रदान करती है। डॉ. प्रीतम ने कहा कि लिथियम आयन बैटरियां अगली पीढ़ी के इलेक्ट्रिक वाहनों के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगी। रसायन विभाग की असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. आशा गुप्ता और उनके मार्गदर्शन में कार्य कर रहे शोधार्थी ने बताया कि 98 वर्षीय प्रोफेसर गुडइनफ नोबेल पुरस्कार प्राप्त करने वाले सबसे अधिक आयु के व्यक्ति हैं। द्वितीय विश्व युद्ध में उन्होंने सैनिक के रूप में भी सेवाएं दीं।

THE TIMES OF INDIA

Date- 12/10/19

'Agri may give big push to $5 trn economy target'

TIMES NEWS NETWORK

Varanasi: Agriculture can be the biggest contributor to the target of 5 trillion dollar economy set by Prime Minister Narendra Modi, according to agriculture scientist and chancellor of Rani Lakshmi Bai Central Agricultural University (Jhansi) Prof Panjab Singh.

Addressing the inaugural session of three-day international conference on 'sustainable agriculture development in changing global scenario' at BHU on Friday, Prof Singh spoke on challenges faced by agriculture sector in India and stressed on sustainable development.

He asked budding scientists to find out solutions to problems concerning agriculture sector.

Chairman, NEFORD, Lucknow, Dr RK Singh said the biggest challenge before farmers was to produce more from lesser inputs.

"Not only India produces poorly and ineffectively but also consumes most of its production. There is need for efficiency in agriculture, reduced usage of water, electricity and fertilizer along with incorporation of sustainable technology in farmlands to boost productivity," he said.

Vice chancellor of Banda University of Agriculture and Technology Dr US Gautam said agricultural transformation should boost socio-economic growth which would make agriculture the backbone of Indian economy.

राष्ट्रीय सहारा

Date- 10/10/19

अर्थव्यवस्था लक्ष्य को हासिल करने में कृषि क्षेत्र की भूमिका महत्वपूर्ण

वाराणसी। कृषि वैज्ञानिक, रानी लक्ष्मीबाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय (झांसी) के कुलाधिपति और बीएचयू के पूर्व कुलपति प्रो. पंजाब सिंह ने कहा कि भारत को पांच ट्रिलियन डालर अर्थव्यवस्था बनाने के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के लक्ष्य को हासिल करने में कृषि क्षेत्र अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। 'बदलते वैश्विक परिदृश्य में सतत कृषि विकास' पर बीएचयू विज्ञान संस्थान के संगोष्ठी संकुल में शुक्रवार को आयोजित तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के उद्घाटन सत्र को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने भारत और देश के कृषि क्षेत्र की प्रमुख चुनौतियों पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने कहा कि 1.3 अरब लोगों की खाद्य आवश्यकताओं की पूर्ति अपने आप में बहुत बड़ी चुनौती है। बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति डा. यूएस गौतम ने कहा कि कृषि क्षेत्र में आ रहे सकारात्मक परिवर्तनों का सामाजिक-आर्थिक विकास पर भी सीधा-सीधा प्रभाव पड़ना चाहिए ताकि कृषि को वास्तव में भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ कहा जा सके। कार्यक्रम की अध्यक्षता एके सिंह, स्वागत प्रो. ओपी सिंह तथा धन्यवाद ज्ञापन डा. राजीव प्रताप सिंह ने किया। इस मौके पर सम्मेलन के प्रकाशनों का विमोचन भी किया गया।

नवीन आयाम विषयक सम्मेलन आज

वाराणसी। बीएचयू में विज्ञान संस्थान के शताब्दी समारोह के तहत 12 अक्टूबर को अपराह्न 2.30 बजे शताब्दी कृषि प्रेक्षागृह में 'पृथ्वी विज्ञान अनुसंधान में नवीन आयाम' विषय पर सम्मेलन का आयोजन किया गया है। मुख्य अतिथि भारत सरकार के पृथ्वी विज्ञान विभाग के सचिव डा. एमएन राजीवन, विशिष्ट अतिथि आरके श्रीवास्तव निदेशक ([illegible]) तेल एवं प्राकृतिक गैस आयोग होंगे।

पांच ट्रिलियन डालर अर्थव्यवस्था के लक्ष्य को हासिल करने में कृषि क्षेत्र की भूमिका महत्वपूर्ण

बीएचयू में आयोजित बदलते वैश्विक परिदृश्य में सतत् कृषि विकास विषयक तीन दिवसीय अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन शुरूकाशी हिन्दू विश्वविद्यालय के पूर्व वाइस चांसलर एवं वर्तमान में राष्ट्रीय कृषि विज्ञान अकादमी नयी दिल्ली के अध्यक्ष प्रोफेसर पंजाब सिंह ने कहा है कि भारत को पांच ट्रिलियन डालर अर्थव्यवस्था बनाने के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के लक्ष्य को हासिल करने में कृषि क्षेत्र अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान दे सकते है। शुक्रवार को काशी हिन्दू विश्वविद्यालय स्थित विज्ञान संस्थान के संगोष्ठी संकुल में आयोजित बदलते वैश्विक परिदृश्य में सतत् कृषि विकास विषयक तीन दिवसीय अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन के उद्घाटन सत्र को सम्बोधित करते हुए प्रोफेसर पंजाब सिंह ने भारत और देश के कृषि क्षेत्र की प्रमुख चुनौतियो पर चर्चा की।

उन्होने कहा कि १.३ अरब लोगों की खाद्य आवश्यकताओं की पूर्ति अपने आप में बहुत बढ़ी चुनौती है। युवा वैज्ञानिक कृषि क्षेत्र की समस्याओं के समाधान खोजने पर काम करे। प्रोफेसर सिंह ने कहा कि सतत् कृषि विकास के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए संसाधनो के कुशल और प्रभावी प्रयोग की बहुत आवश्यकता है और इसके लिए आवश्यक सुविधाओ और तकनीकों की उपलब्धता समय की मांग है। लखनऊ स्थित नन्द शैक्षिक ग्रामीण विकास संस्था के अध्यक्ष डॉक्टर आरके सिंह ने कहा कि आज किसानो के समक्ष कम संसाधनों में अधिक उत्पादन की चुनौती है। ऐसे में संसाधनो के कुशल प्रयोग के साथ.साथ विज्ञान के अधिकाधिक इस्तेमाल की आवश्यकता है। इस अवसर पर युवा और प्रख्यात वैज्ञानिको को सम्मानित भी किया गया। इसके अलावा डॉक्टर रजनीश सिंह एवं डॉक्टर वृजेन्द्र सिंह द्वारा लिखित दो पुस्तकों का भी विमोचन किया गया। धन्यवाद ज्ञापन आयोजन सचिव डॉक्टर राजीव प्रताप सिंह ने किया।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
BANARAS HINDU UNIVERSITY

NEWS CLIPPINGS
Page No. 10
Date-
सूचना एवं जन सम्पर्क कार्यालय
Information & Public Relations Office
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
BANARAS HINDU UNIVERSITY

जनसंदेश टाइम्स

पांच ट्रिलियन डालर एकॉनमी के लिए कृषि अहम

बीएचयू विज्ञान संकुल में आयोजित कार्यक्रम की सीडी का विमोचन करते डा.पंजाब सिंह और अन्य अतिथिगण

जनसंदेश न्यूज

अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन

बीएचयू विज्ञान संस्थान संकुल में बोले प्रो. पंजाब सिंह

'बदलते वैश्विक परिदृश्य में सतत कृषि विकास' का आयोजन

वाराणसी। भारत को पाँच ट्रिलियन डालर अर्थव्यवस्था बनाने के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के लक्ष्य को हासिल करने में कृषि क्षेत्र अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान दे सकते है। 1.3 अरब लोगों की खाद्य आवश्यकताओं की पूर्ति अपने आप में बहुत बड़ी चुनौती है।

यह बातें प्रख्यात कृषि वैज्ञानिक, रानी लक्ष्मीबाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय झाँसी के कुलाधिपति और बीएचयू के पूर्व कुलपति प्रो.पंजाब सिंह ने कही। वह शुक्रवार को 'बदलते वैश्विक परिदृश्य में सतत कृषि विकास' पर काशी हिन्दू विश्वविद्यालय स्थित विज्ञान संस्थान के संगोष्ठी संकुल में आयोजित तीन दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन के उदघाटन सत्र को सम्बोधित कर रहे थे।

इस अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन बीएचयू पर्यावरण एवं धारणीय विकास संस्थान (आईएसईडी) और विज्ञान आधारित सामाजिक-सांस्कृतिक प्रगति के लिए रायल एसोसिएशन (आरएएसएसए) ने संयुक्त रूप से किया है। इसके साथ ही आरएएसएसए के अध्यक्ष एके सिंह ने किसानो और कृषि क्षेत्र के हित में अधिक कृषि अनुसंधान की आवश्यकता पर बल दिया।

पर्यावरण एवं धारणीय विकास संस्थान (आइएसईडी) के संकाय प्रमुख प्रो.जीएस सिंह ने अपने स्वागत उदबोधन में बीएचयू की यात्रा की चर्चा की और आइएसईडी के संचालित गतिविधियों की जानकारी दी। अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन के आयोजन सचिव डा.राजीव प्रताप सिंह ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

वैज्ञानिक सत्र में शोध-पत्र की प्रस्तुति

सम्मेलन के पहले दिन प्रथम तकनीकि सत्र मे वैज्ञानिकों और शोधार्थियों ने विभिन्न विषयो पर अपने शोध पत्र भी प्रस्तुत किये। विज्ञान संस्थान के वनस्पति विज्ञान विभाग की प्रो. मधुलिका अग्रवाल ने 'ट्रोपोस्फेरिक ओजोन एक हिडेन थ्रेट टू फूड सिक्योरिटी' शीर्षक के शोध पत्र को प्रस्तुत किया। जिसमे निरन्तर बढ़ते वायु प्रदूषण से ग्रामीण क्षेत्रो में कृषि उत्पादकता पर पड़ रहे प्रतिकूल प्रभाव की चर्चा की गयी है। इसमें बताया गया है कि वाहनो से होने वाले प्रदूषण से उत्पादन में कमी दर्ज की गयी है।

> किसानो के समक्ष कम संसाधनों में अधिक उत्पादन की चुनौती है। भारत में कृषि उत्पादकता में न सिर्फ बेहतर तकनीकों का अभाव है बल्कि उत्पादन का अधिकांश भाग उपभोग भी कर लिया जाता है। ऐसे में संसाधनो के कुशल प्रयोग के साथ-साथ विज्ञान के अधिकाधिक इस्तेमाल की आवश्यकता है।
>
> डा.आरके सिंह- अध्यक्ष, नंद शैक्षणिक ग्रामीण विकास संस्थान-लखनऊ

> कृषि क्षेत्र में आ रहे सकारात्मक परिवर्तनो का सामाजिक-आर्थिक विकास पर भी सीधा-सीधा प्रभाव पड़ना चाहिए ताकि कृषि को वास्तव में भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ कहा जा सके।
>
> डा.यूएस गौतम- वीसी, कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय बांदा

कृषि क्षेत्र की पुस्तकों का विमोचन

युवा और प्रख्यात वैज्ञानिको को सम्मानित भी किया गया। इसके अलावा डा.रजनीश सिंह एवं डा. बृजेन्द्र सिंह की लिखित दो पुस्तकों 'बेसिक हर्टिकल्चर एंड फ्रूट प्रोडक्शन टेक्नोलाजी एंड प्रैक्टिकल एप्रोचेजेज इन हर्टिकल्चर' का भी विमोचन किया गया। इसके साथ ही इस दौरान सम्मेलन के प्रकाशनो का भी विमोचन हुआ।

पायनियर

Date-......

'किसान की आय दोगुनी करने का रास्ता है प्राकृतिक खेती'

वाराणसी। बीएचयू वैदिक विज्ञान केन्द्र की ओर से मालवीय मूल्य अनुशीलन केन्द्र के व्याख्यान कक्ष में विशिष्ट व्याख्यान का आयोजन किया गया। प्राकृतिक खेती पर विशिष्ट व्याख्यान देते हुए गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द और महामना ने राष्ट्र के हित के लिए युवा वर्ग को इस तरह से तैयार करने को कहा कि वे राष्ट्रहित और समाजहित के पक्ष में योगदान दे सकें। प्राकृतिक खेती किसानों के लिए शून्य बजट आधारित खेती है। उन्होंने बताया कि एक देशी गाय से 30 एकड़ की खेती सम्भव है। ऐसी खेती जहरमुक्त और जलवायु को प्रदूषण से बचाती है। उन्होंने दो तरह के प्राकृतिक खाद तैयार करने की विधि, प्रयोग और इसका लाभ बताया। उन्होंने बताया कि एक देशी गाय के गोबर से 30 एकड़ खेती की जा सकती है। 200 लीटर के बर्तन में 180 लीटर पानी लें उसमें 10 किलो ग्राम गाय का गोबर और एक दिन का गोमूत्र तथा उसमें एक किलो किसी भी दाल का बेसन और डेढ़ किलो गुड़ डालकर उसमें दो मुट्ठी मिट्टी डाल उसे सुबह-शाम घड़ी की दिशा में चलाना है। इससे पांच से छह दिन में खाद तैयार हो जाती है जो एक एकड़ खेत के लिए पर्याप्त है। कार्यक्रम के अध्यक्ष ने कहा कि दवाओं के उपयोग से बचना चाहिए तथा एन्टीबायटिक का प्रयोग न करके हम प्राकृतिक जीवन शैली के साथ प्रकृति के साथ जीएं। यही सम्पूर्ण सृष्टि के स्वास्थ्य का आधार है। कुलसचिव डा. नीरज त्रिपाठी ने कहा कि प्राकृतिक खेती राष्ट्र की आवश्यकता है। वैदिक विज्ञान केन्द्र का परिचय डा. उपेन्द्र त्रिपाठी ने दिया।

12
12/11/019

दैनिक आज

पांच ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने में कृषि क्षेत्र की भूमिका अहम

- बीएचयू में कृषि विकास पर आयोजित गोष्ठी में बोले पूर्व कुलपति प्रो. पंजाब सिंह
- युवा वैज्ञानिकों से कृषि क्षेत्र की समस्याओं का समाधान खोजने का आह्वान

[illegible]

संगोष्ठी में पत्रिका का विमोचन करते अतिथिगण।

वाराणसी। भारत को पांच ट्रिलियन डालर की अर्थव्यवस्था बनाने के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के लक्ष्य को हासिल करने में कृषि क्षेत्र की भूमिका अहम है। साथ ही कृषि के क्षेत्र में बहुत सारी चुनौतियां भी हैं। इसके लिए हमें तेजी से और उन्नत कृषि तकनीकों को अपनाने की जरूरत है।

उक्त विचार बीएचयू के पूर्व कुलपति, रानी लक्ष्मीबाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी के कुलाधिपति प्रो. पंजाब सिंह ने शुक्रवार को काशी हिंदू विश्वविद्यालय के विज्ञान संस्थान के संगोष्ठी संकुल में आयोजित 'बदलते वैश्विक परिदृश्य में सतत कृषि विकास' विषयक तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते कही। उन्होंने कहा कि देश के 1.3 अरब लोगों की खाद्य जरूरतों की पूर्ति बहुत बड़ी चुनौती है। देश के युवा वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि वे कृषि क्षेत्र की समस्याओं के समाधान खोजें। देश के कृषि क्षेत्र की प्रमुख चुनौतियों पर चर्चा की। राष्ट्रीय कृषि विज्ञान अकादमी, नई दिल्ली के अध्यक्ष प्रो. सिंह ने कहा कि सतत कृषि विकास के लक्ष्य पाने के लिए संसाधनों के कुशल और प्रभावी प्रयोग की जरूरत है। आवश्यक सुविधाओं और तकनीकों की उपलब्धता समय की मांग है। लखनऊ स्थित नन्द शैक्षिक ग्रामीण विकास संस्था के अध्यक्ष डॉ. आरके सिंह ने कहा कि आज किसानों के समक्ष कम संसाधनों में अधिक उत्पादन की चुनौती है। भारत में कृषि उत्पादकता में न सिर्फ बेहतर तकनीकों का अभाव है, बल्कि उत्पादन का अधिकांश भाग उपभोग भी कर लिया जाता है। ऐसे में संसाधनों के कुशल प्रयोग के साथ-साथ विज्ञान के अधिकाधिक इस्तेमाल की जरूरत है। बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. यूएस गौतम ने कहा कि कृषि क्षेत्र में आ रहे सकारात्मक परिवर्तनों का सामाजिक-आर्थिक विकास पर भी सीधा प्रभाव पड़ना चाहिए, ताकि कृषि को वास्तव में भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ कहा जा सके। एके सिंह ने किसानों और कृषि क्षेत्र के हित में अधिक कृषि अनुसंधान की जरूरत पर बल दिया। सम्मेलन के पहले दिन प्रथम तकनीकी सत्र में वैज्ञानिकों और शोधार्थियों ने विभिन्न विषयों पर अपने शोध पत्र भी प्रस्तुत किये। विज्ञान संस्थान के वनस्पति विज्ञान विभाग की प्रो. मधुलिका अग्रवाल ने शोध पत्र प्रस्तुत किया। इसमें निरन्तर बढ़ते वायु प्रदूषण से ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि उत्पादकता पर पड़ रहे प्रतिकूल प्रभाव की चर्चा है। उन्होंने बताया कि वाहन प्रदूषण से उत्पादन में कमी आई है। इस अवसर पर युवा और प्रख्यात वैज्ञानिकों को सम्मानित भी किया गया। इसके अलावा डॉ. रजनीश सिंह व डॉ. बृजेन्द्र सिंह द्वारा लिखित दो पुस्तकों का भी विमोचन हुआ। सम्मेलन के प्रकाशनों का भी इस विमोचन हुआ। तीन दिवसीय सम्मेलन 13 तक चलेगा। इसमें देशभर से आये कृषि वैज्ञानिक और विशेषज्ञ कृषि की चुनौतियों और समस्याओं से निपटने के लिए नये तरीकों पर मंथन करेंगे, ताकि सतत कृषि विकास के लिए विभिन्न तकनीकों की सहायता से किसानों की आय दुगुनी की जा सके। इस मौके पर आए अतिथियों का स्वागत प्रो. जीएस सिंह और धन्यवाद ज्ञापन डॉ. राजीव प्रताप सिंह ने दिया।

अमर उजाला

5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने में कृषि क्षेत्र महत्वपूर्ण

बीएचयू विज्ञान संकुल सभागार में सतत कृषि विकास पर आयोजित अंतरराष्ट्रीय सेमिनार में पुस्तक का विमोचन करते प्रो पंजाब सिंह व अन्य।

बीएचयू के विज्ञान संस्थान में अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन

युवा और प्रख्यात वैज्ञानिकों को किया सम्मानित

अमर उजाला ब्यूरो

वाराणसी। भारत को पांच ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने के लक्ष्य में कृषि क्षेत्र महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है। युवा वैज्ञानिक कृषि क्षेत्र की समस्याओं के समाधान खोजने पर काम करें। उक्त विचार रानी लक्ष्मीबाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय झांसी के कुलाधिपति प्रो. पंजाब सिंह ने व्यक्त किए। वह शुक्रवार को बदलते वैश्विक परिदृश्य में सतत कृषि विकास पर बीएचयू के विज्ञान संस्थान में आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे। सम्मेलन के पहले दिन प्रथम सत्र में शोधार्थियों ने शोध पत्र प्रस्तुत किए। इस अवसर पर युवा और प्रख्यात वैज्ञानिकों को सम्मानित किया गया। इसके अलावा डॉ. रजनीश सिंह, डॉ. बृजेंद्र सिंह की पुस्तकों का भी विमोचन किया गया।

इस दौरान डॉ. आरके सिंह ने कहा कि किसानों के सामने कम संसाधनों में अधिक उत्पादन की चुनौती है। बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. यूएस गौतम ने कहा कि कृषि क्षेत्र में आ रहे सकारात्मक परिवर्तनों का सामाजिक-आर्थिक विकास पर भी सीधा-सीधा प्रभाव पड़ेगा। इस अवसर पर एके सिंह, प्रो. जीएस सिंह, डॉ. राजीव प्रताप सिंह ने विचार व्यक्त किए।

hindustantimes
Date- 12/10/19

'Farm sector can play biggest role in achieving $5 trillion economy goal'

HT Correspondent

VARANASI : The agriculture sector can be the biggest contributor to the $5 trillion dollar economy target set by Prime Minister Narendra Modi, eminent agriculture scientist prof Panjab Singh said here on Friday.

Panjab Singh, who is chancellor of the Rani Lakhsmi Bai Central Agricultural University (Jhansi), was speaking at the inaugural session of an international conference on sustainable agriculture development in changing global scenario at Institute of Science, Banaras Hindu University.

He spoke at length about the major challenges faced by India and the agriculture sector, including feeding a population of over 1.3 billion people.

Singh, who is also the President of the National Academy of Agriculture Sciences, New Delhi, called upon budding scientists to work on finding solutions to problems that concern the agriculture sector.

Expressing concern over the non-effective use of resources, be it water or energy, Singh said better infrastructure and technology was a must in order to achieve sustainable agricultural development. Dr RK Singh, chairman, NEFORD, Lucknow, said the bigger challenge before farmers was to produce more from less inputs. The conference is jointly organised by Institute of Environment and Sustainable Development, BHU and Royal Association for Science -Led Socio-Cultural Advancement (RASSA).

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय BANARAS HINDU UNIVERSITY सूचना एवं जन सम्पर्क कार्यालय

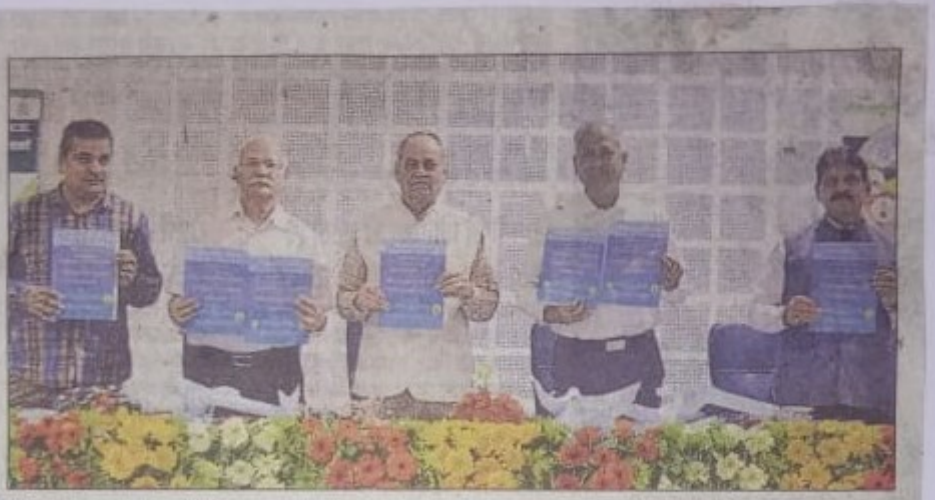

बीएचयू के विज्ञान संस्थान में दो पुस्तकों का विमोचन करते पूर्व वीसी प्रो. पंजाब सिंह व अन्य विशिष्टजन। • हिन्दुस्तान

बढ़ती आबादी का पेट भरना व रोजगार भविष्य की चुनौती

वाराणसी | कार्यालय संवाददाता

रानी लक्ष्मीबाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के पूर्व कुलाधिपति प्रो. पंजाब सिंह ने कहा कि देश की बढ़ती आबादी का पेट भरना और उन्हें रोजगार मुहैया करना भविष्य की सबसे बड़ी चुनौती है। इस लक्ष्य को हासिल करने में कृषि का क्षेत्र महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। वह शुक्रवार को बीएचयू के विज्ञान संस्थान के संगोष्ठी संकुल में बदलते वैश्विक परिदृश्य में सतत कृषि विकास विषय पर आयोजित तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के उद्घाटन अवसर पर बोल रहे थे।

प्रो. सिंह ने कहा कि भारत को पांच ट्रिलियन डालर की अर्थव्यवस्था बनाने के प्रधानमंत्री के लक्ष्य को हासिल करने में कृषि क्षेत्र महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है। लखनऊ के डॉ. आरके सिंह ने कहा कि भारत में कृषि उत्पादकता में न सिर्फ बेहतर तकनीकों का अभाव है बल्कि उत्पादन का अधिकांश भाग उपभोग भी कर लिया जाता है। बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति

सतत विकास

- पांच ट्रिलियन अर्थव्यवस्था में कृषि क्षेत्र दे सकता है योगदान
- कृषि में सकारात्मक परिवर्तन का दूसरे क्षेत्रों पर भी असर दिखे

डॉ. यूएस गौतम ने कहा कि कृषि क्षेत्र के सकारात्मक परिवर्तनों का सामाजिक-आर्थिक विकास पर भी प्रभाव पड़ना चाहिए।

इस अवसर पर डॉ. रजनीश सिंह व डॉ. बृजेन्द्र सिंह द्वारा लिखित दो पुस्तकों का विमोचन हुआ। तकनीकी सत्रों में कृषि वैज्ञानिकों व शोध छात्रों ने कृषि विकास के मॉडल तथा बदलते कृषि पर शोध पत्र पढ़ा। वनस्पति विज्ञान विभाग की प्रो. मधुलिका अग्रवाल ने बढ़ते वायु प्रदूषण से कृषि उत्पादकता पर पड़ रहे प्रतिकूल प्रभाव की चर्चा की। सम्मेलन में फिलीपिंस, नेपाल, श्रीलंका, बांग्ला देश, अमेरिका, आस्ट्रेलिया मैक्सिको के करीब 90 वैज्ञानिकों ने भाग लिया। स्वागत प्रो. जीएस सिंह तथा धन्यवाद डॉ. राजीव प्रताप सिंह ने दिया।

प्रो. गुडइनफ को नोबेल पर खुशी

वाराणसी। लिथियम ऑयन बैटरी के विकास के लिए अमेरिकी रसायन वैज्ञानिक प्रोफेसर जॉन गुडइनफ को 2019 का नोबेल पुरस्कार दिए जाने की घोषणा पर आईआईटी बीएचयू में खुशी का माहौल है। इस संस्थान के प्राध्यापक प्रो. गुडइनफ के मार्गदर्शन में शोध कर चुके हैं।

आईआईटी में सिरामिक इंजीनियरिंग विभाग में असिस्टेंट प्रोफेसर और जॉन गुडइनफ के पूर्व शोध छात्र डॉ. प्रीतम सिंह ने बताया कि लिथियम ऑयन बैटरी वैश्विक स्तर पर पोर्टेबल इलेक्ट्रानिक्स, लंबी दूरी की इलेक्ट्रिक कारों एवं ऊर्जा के नवीन स्रोतों के भंडारण को बल प्रदान करती है। डॉ. प्रीतम ने कहा कि लिथियम ऑयन बैटरियां अगली पीढ़ी के इलेक्ट्रिक वाहनों के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगी। रसायन विभाग की असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. आशा गुप्ता और उनके मार्गदर्शन में कार्य कर रहे शोधार्थी ने बताया कि 98 वर्षीय प्रोफेसर गुडइनफ नोबेल पुरस्कार प्राप्त करने वाले सबसे अधिक आयु के व्यक्ति हैं। द्वितीय विश्व युद्ध में उन्होंने सैनिक के रूप में भी सेवाएं दीं।

खाद्य सुरक्षा में अहम भूमिका निभा सकता है गुड़

बीएचयू स्थित मालवीय अनुशीलन केंद्र के सभागार में बदलते वैश्विक परिदृश्य में सतत कृषि विकास पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में विचार व्यक्त करते डॉ .एके सिंह ● जागरण

जागरण संवाददाता, वाराणसी : काशी हिंदू विश्वविद्यालय स्थित मालवीय मूल्य अनुशीलन केंद्र में चल रहे तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के दूसरे दिन सतत कृषि विकास पर मंथन हुआ। छात्र-छात्राओं के साथ ही इसमें वाराणसी के आस-पास के किसानों ने प्रतिभाग किया। वक्ताओं ने जलवायु, स्मार्ट कृषि, पशुधन उत्पादन की उन्नत तकनीक, जलवायु परिवर्तन, जैव-विविधता, बौद्धिक सम्पदा अधिकार, कृषि शिक्षा के प्रसार आदि पर प्रकाश डाला।

भारतीय कृषि विज्ञान संस्थान के वैज्ञानिक डा. नागेन्द्र कुमार सिंह ने फसल को जलवायु अनुकूल बनाने के तरीके बताए। वहीं कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिक डा. नागेंद्र रघुवंशी ने जलवायु के कारण पशुधन उत्पादन पर पड़ रहे प्रभावों से प्रतिभागियों को अवगत कराया। भारतीय चीनी अनुसंधान केंद्र, लखनऊ के डा. जसवंत सिंह ने पारंपरिक गुड के पौष्टिक एवं औषधीय गुणों की जानकारी दी। तकनीकि सत्र में विशेषज्ञों व किसानों के मध्य संवाद भी हुआ। प्रगतिशील किसानों ने खाद, फसल, बाजार, तकनीक आदि से जुड़ी अपनी समस्याएं साझा की। धन्यवाद ज्ञापन आयोजन सचिव डा. राजीव प्रताप सिंह ने किया।

सम्मेलन

- 'बदलते वैश्विक परिदृश्य में सतत कृषि विकास' विषयक सम्मेलन
- पारंपरिक गुड़ के पौष्टिक व औषधीय गुणों के बारे में दी जानकारी

फाइव ट्रिलियन डॉलर इकोनॉमी में कृषि क्षेत्र की भूमिका अहम

अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में बोले ख्यात कृषि वैज्ञानिक प्रो. पंजाब सिंह

जासं, वाराणसी : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के फाइव ट्रिलियन डॉलर इकोनॉमी के लक्ष्य को हासिल करने में कृषि क्षेत्र की भूमिका महत्वपूर्ण है। लक्ष्य हासिल करने के लिए संसाधनों का कुशल और प्रभावी प्रयोग जरूरी है, जिसके लिए आवश्यक सुविधाओं और तकनीकों की उपलब्धता समय की मांग है। यह बातें बीएचयू के पूर्व कुलपति व राष्ट्रीय कृषि विज्ञान अकादमी (नास) के अध्यक्ष प्रो. पंजाब सिंह ने कही। वह बीएचयू स्थित विज्ञान संस्थान के संगोष्ठी संकुल में शुक्रवार को तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन 'बदलते वैश्विक परिदृश्य में सतत कृषि विकास' के उद्घाटन सत्र को संबोधित कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि 1.3 अरब लोगों की खाद्य आवश्यकताओं की पूर्ति अपने आप में बहुत बड़ी चुनौती है। इसके लिए सुविधाओं संग नवीन तकनीक का कुशलता से प्रयोग करना होगा। युवा वैज्ञानिक कृषि क्षेत्र की समस्याओं के समाधान खोजने की दिशा में काम करें, ताकि वांछित लक्ष्य हासिल किया जा सके। उन्होंने बताया कि वर्तमान में प्राकृतिक संसाधनों का गलत तरीके से दोहन हो रहा है। इसलिए तकनीक का

बीएचयू

- कहा, लक्ष्य प्राप्ति के लिए संसाधनों का हो कुशल व प्रभावी उपयोग
- 'बदलते वैश्विक परिदृश्य में सतत कृषि विकास' को किया संबोधित

बीएचयू स्थित विज्ञान संकुल में विचार व्यक्त करते प्रो. पंजाब सिंह ● जागरण

उद्देश्य उत्पादन बढ़ाने के साथ-साथ प्राकृतिक संसाधनों को भी बढ़ाना होना चाहिए। नंद शैक्षिक ग्रामीण विकास संस्था-लखनऊ के अध्यक्ष डा. आर के सिंह ने कहा कि किसानों के सामने सीमित संसाधन में अधिक उत्पादन की चुनौती है। बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिकी विवि के कुलपति डा. यूएस गौतम ने कहा कि कृषि क्षेत्र में आ रहे सकारात्मक बदलाव का सामाजिक-आर्थिक विकास पर भी प्रभाव पड़ना चाहिए, ताकि कृषि क्षेत्र को वास्तव में भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ कहा जा सके। वहीं अध्यक्षता करते हुए आरएएसएसए (रॉयल एसोसिएशन फार साइंस-लेड सोशियो-कल्चरल एडवांसमेंट) के अध्यक्ष इंजीनियर एके सिंह ने किसानों और कृषि क्षेत्र के हितों को ध्यान में रखते हुए शोध कार्य पर बल दिया। उन्होंने कहा कि गांव व शहर दोनों जगह समिति बनाई जाएं। किसानों के उत्पाद समितियों के माध्यम से सीधे शहर में पहुंचे और शहर की समितियां शिक्षा और तकनीक गांव-गांव में पहुंचाए। इससे किसानों को बिचौलियों से छुटकारा मिलेगा और उनका जीवन समृद्ध होगा। इस दौरान युवा कृषि वैज्ञानिकों का सम्मान गया। साथ ही डा. रजनीश सिंह व डा. बृजेंद्र सिंह द्वारा लिखित दो पुस्तकों का विमोचन भी किया गया।

सम्मेलन के पहले दिन तकनीकी सत्रों में वैज्ञानिकों व शोधार्थियों ने विभिन्न विषयों पर शोध पत्र प्रस्तुत किए। स्वागत पर्यावरण एवं धारणीय विकास संस्थान के संकाय प्रमुख प्रो. जीएस सिंह व धन्यवाद ज्ञापन आयोजन सचिव डा. राजीव प्रताप सिंह ने किया।

स्मार्ट कृषि से बदलेगी किसानों की स्थिति

बीएचयू स्थित मालवीय अनुशीलन केंद्र के सभागार में बदलते वैश्विक परिदृश्य में सतत कृषि विकास पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में विचार व्यक्त करते नरेंद्र सिंह • जागरण

जासं, वाराणसी : बीएचयू स्थित मालवीय मूल्य अनुशीलन केंद्र सभागार में चल रहे 'बदलते वैश्विक परिदृश्य में सतत कृषि विकास' विषयक तीन दिवसीय सम्मेलन का समापन रविवार को हुआ।

वक्ताओं ने जलवायु परिवर्तन, स्मार्ट कृषि, खाद्य विज्ञान, फसल कटाई के बाद की उन्नत तकनीक, जैव-विविधता, बौद्धिक संपदा अधिकार, कृषि शिक्षा एवं इसका प्रसार, कृषि नीति तथा पशुधन उत्पादन आदि विषयों पर व्याख्यान दिए। साथ ही 21वीं शताब्दी में कृषि की चुनौतियों मसलन जलवायु परिवर्तन, बढ़ती जनसंख्या, घटते प्राकृतिक संसाधन आदि के परिप्रेक्ष्य में उत्पादन बढ़ाने के नवीन तकनीकों और उपायों पर चर्चा हुई।

सम्मेलन का आयोजन रॉयल विज्ञान-सेवित सामाजिक-सांस्कृतिक उत्थान संस्था व पर्यावरण एवं धारणीय विकास संस्थान-बीएचयू की ओर से किया गया था। समापन सत्र के मुख्य अतिथि पूर्वांचल विकास बोर्ड उप्र के उपाध्यक्ष नरेंद्र सिंह एवं विशिष्ट अतिथि बाबा भीम राव अंबेडकर विवि के प्रो. राणा प्रताप सिंह थे। अध्यक्षता आरएसएसएस के इंजीनियर एके सिंह व धन्यवाद ज्ञापन आयोजन सचिव डा. राजीव प्रताप सिंह ने किया।

बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे पं. हीरालाल मिश्र

जागरण संवाददाता, वाराणसी : बीएचयू स्थित ज्योतिष विभाग में काशी के ख्यात ज्योतिर्विद एवं धर्मशास्त्री स्व. पं. हीरालाल मिश्र की स्मृति विगत 18 सितंबर से चल रही 'पंचांग प्रशिक्षण कार्यशाला' रविवार को संपन्न हुई। वक्ताओं ने पं. हीरालाल के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला। कहा ज्योतिष, कर्मकांड, वास्तु, भवन निर्माण, विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, शकुन शास्त्र आदि में स्व. हीरालाल पारंगत थे। साथ ही ज्योतिष के तीनों स्कंध में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा। इस दौरान ज्योतिष विभाग के अध्यक्ष प्रो. विनय कुमार पांडेय, डा. सुभाष पांडेय, प्रो. गिरिजाशंकर शास्त्री, प्रो. चंद्रमौलि उपाध्याय, प्रो. रामजीवन मिश्र, डा. सुशील गुप्ता आदि ने विचार व्यक्त किए। संचालन डा. सुनील त्रिपाठी व धन्यवाद ज्ञापन प्रो. कृपाशंकर ने किया।

इंटर स्कूल प्रतियोगिता 'ब्लिस' का आयोजन

जासं, वाराणसी : आइआइटी, बीएचयू के वार्षिक सांस्कृतिक महोत्सव काशीयात्रा ने आर्यन इंटरनेशनल स्कूल के सहयोग से रविवार को इंटर स्कूल प्रतियोगिता 'ब्लिस' का आयोजन किया। इसमें शहर के कई विद्यालयों के छात्र-छात्राओं ने प्रतिभाग किया। साहित्य की कलाओं के विविध गेम (इंडिया) लिमिटेड ने पर्यावरण संबंधी जागरूकता बढ़ाने के मकसद से तैयार किए थे। कार्यक्रम की शुरुआत डा. अनिल रिवरिया व डा. गुंजन ने दीप प्रज्वलित कर किया। वहीं समन्वयक उत्सव गांधी ने छात्र-छात्राओं को प्रतियोगिता के उद्देश्य से अवगत कराया।

-जुली, कक्षा-11

-श्रेया, कक्षा-10

की आलोचना करना उचित नहीं है। हां कमियां बताया, उसे दूर करने का उपाय बताना गलत नहीं है। इससे हमारे संबंधों को और मजबूती मिलती है। बस इसका तरीका हमें आना चाहिए। कोई भी बात यदि उचित अवसर देखकर किया जाय तो संबंधों में कभी भी दरार नहीं पड़ती है।

खाद्य सुरक्षा में अहम भूमिका निभा सकता है गुड़

बीएचयू स्थित मालवीय अनुशीलन केंद्र के सभागार में बदलते वैश्विक परिदृश्य में सतत कृषि विकास पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में विचार व्यक्त करते डॉ .एके सिंह • जागरण

जागरण संवाददाता, वाराणसी : काशी हिंदू विश्वविद्यालय स्थित मालवीय मूल्य अनुशीलन केंद्र में चल रहे तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के दूसरे दिन सतत कृषि विकास पर मंथन हुआ। छात्र-छात्राओं के साथ ही इसमें वाराणसी के आस-पास के किसानों ने प्रतिभाग किया। वक्ताओं ने जलवायु, स्मार्ट कृषि, पशुधन उत्पादन की उन्नत तकनीक, जलवायु परिवर्तन, जैव-विविधता, बौद्धिक सम्पदा अधिकार, कृषि शिक्षा के प्रसार आदि पर प्रकाश डाला।

भारतीय कृषि विज्ञान संस्थान के वैज्ञानिक डा. नागेन्द्र कुमार सिंह ने फसल को जलवायु अनुकूल बनाने के तरीके बताए। वहीं कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिक डा. नागेंद्र रघुवंशी ने जलवायु के कारण पशुधन उत्पादन पर पड़ रहे प्रभावों से प्रतिभागियों को अवगत कराया। भारतीय चीनी अनुसंधान केंद्र, लखनऊ के डा. जसवंत सिंह ने पारंपरिक गुड़ के पौष्टिक एवं औषधीय गुणों की जानकारी दी। तकनीकि सत्र में विशेषज्ञों व किसानों के मध्य संवाद भी हुआ। प्रगतिशील किसानों ने खाद, फसल, बाजार, तकनीक आदि से जुड़ी अपनी समस्याएं साझा की। धन्यवाद ज्ञापन आयोजन सचिव डा. राजीव प्रताप सिंह ने किया।

सम्मेलन

- 'बदलते वैश्विक परिदृश्य में सतत कृषि विकास' विषयक सम्मेलन
- पारंपरिक गुड़ के पौष्टिक व औषधीय गुणों के बारे में दी जानकारी

में डंका

जैमर के पहरे में होगी